हम भी अपने परमपिता परमात्मा से मिल सकते हैं

एक मान्यता चली आ रही है कि कुछ ऐसे लोग ही परमात्मा से मिल सकते हैं या उनके नज़दीक जा सकते हैं जिन्होंने धर्म, अध्यात्म के आधार से कुछ जीवन जीया है या सन्यास धर्म को धारण करके उसकी खोज में गए हैं, या बहुत गहन तपस्या की है जिसके आधार से परमात्मा उनसे प्रसन्न होकर उनको दर्शन देंगे। यही कुछ गहरी मान्यताओं ने मानव को डरा दिया। और कहा कि कहाँ! हम मिल सकते हैं उनसे। लेकिन आज ये बिल्कुल भी अमान्य भी है और बिल्कुल सम्भव भी है कि परमात्मा हमारा है और हमसे मिलता भी है। क्योंकि हम कहते हैं परमात्मा हमारा पिता है तो अपने बच्चों से मिलना लाज़मी है।

परमात्मा को दुनिया में गरीब निवाज़ कहते हैं और गरीब निवाज़ का अर्थ है- वो जो भावना वाले हैं, जिनका दिल शुद्ध है, पवित्र है उनको परमात्मा नवाज़ता है। उनको एक जागीर तक देता है। परमात्मा से मिलने का आधार शुभ और सात्विक कर्म हैं न कि शास्त्रित अध्ययन और न ही सन्यास। परमात्मा विकारों से सन्यास कराते और देह से न्यारा होने का अभ्यास कराते। ये दो ही ऐसे मुख्य कार्य हैं जो हमको परमात्मा के नज़दीक ले जाते हैं। कुछ लोगों ने उसको उल्टी गंगा के रूप में बहाया कि आपको विकारों के सन्यास की जगह संसार छुड़ा दिया और देह से न्यारा होने की जगह कर्म और सम्बन्ध से न्यारा होना सिखा दिया। बस यहीं से गलती हो गई और इसी से हम दूर होते गए। परमात्मा तो सभी का है ना! अगर हम कर्म और सम्बन्ध से न्यारा हो जाएंगे तो परमात्मा को कोई पसंद नहीं करेगा ना! इसीलिए उससे मिलना आसान है केवल देह भान से न्यारा होना उसके नज़दीक पहुंचने का आधार है।

आज पिछले नौ दशकों से परमात्मा का दिव्य अवतरण केवल हमारे लिए ही हो रहा है। लेकिन हमारे मिलन की तैयारी का आधार जब तक नहीं होगा तब तक उससे मिलकर भी हम उसको समझ नहीं पाएंगे। क्योंकि वो शरीर से न्यारा है, परमधाम निवासी है। हमें उसको जानने के लिए वैसे देह भान से न्यारा बनना पड़ता है। आज भी उसकी उपस्थिति माउंट आबू में स्थित परमात्मा के घर में होती रहती है और वो उतने समय से लोग अनुभव कर-करके सुनाते रहते हैं कि परमात्मा हैं तो यहीं हैं और कहीं नहीं है। ये एक साधारण माता से लेकर एक वैज्ञानिक तक को तब अनुभव होगा जब वो सत्य साफ मन से, अपने मूल आत्मिक स्वरूप में आएंगे और वो ही मूल स्वरूप हमें उससे मिलवाएगा। तो चलो मूल स्वरूप में आएं और परमात्मा से मिलन का आनंद उठाएं।

सत्य परमात्म पहचान की पाँच कसौटी

किसी की पहचान या परिचय किसी न किसी के साथ जोड़कर दिया जाता है, तो वो परिचय सही नहीं माना जाता। जैसे अगर व्यक्ति के साथ वस्तु को हटा दें तो वस्तु अलग है, व्यक्ति अलग है, दोनों का अस्तित्व अलग है, दोनों का प्रयोग अलग है। वैसे ही परमात्मा की पहचान और उसको पहचानने का आधार दोनों ही अलग हैं। सबने प्रयास किया लेकिन अपने अपने आधार से। सबने कहा कि परमात्मा सबका एक है लेकिन व्याया अलग-अलग की। सभी धर्म ने अलग कर दिया, सभी वर्ग ने अलग कर दिया सभी असमंजस की स्थिति में आ गए कि किसको माने या किसको ना मानें! इस ऊहापोह की स्थिति से निकलने के लिए परमात्मा के पहचानने की पाँच कसौटी जो मान्यता प्राप्त है, वो आपके सामने रख रहे हैं, आप देखें, निहारें अपने परमपिता को और सोचे।

जो सर्वमान्य हो

कहा जाता है कि जिसको सभी एक आवाज़ में स्वीकार करें वो परमात्मा हो सकता है।

लेकिन अन्य अनेक धर्मों में जो भी देवी-देवता या धर्म पिता या महान आत्मा हैं उसको एक विशेष वर्ग ने अपनाया, सभी ने मान्यता नहीं दी। अगर उसे सभी मान्यता दें तो भगवान हो सकता है।

जो जन्म-मरण के चक्र से है न्यारा

कहा जाता है जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी होती है। तो जिसका जन्म और मृत्यु हो वो कर्म भी करेगा और उसके कर्म का खाता भी बनेगा और उसे चुकाना भी होगा। अगर भगवान भी ये सबकुछ करेगा तो हमको निकालेगा कौन? इसलिए जो न्यारा है उसी को तो हम पुकारते हैं। तो जो जन्म-मरण में आये तो वो भगवान तो नहीं हो सकता।

जो सर्वोच्च हो

इस दुनिया में सबके माता-पिता, बंधु-सखा सब दिखाए जाते हैं। लेकिन परमात्मा ऊंचे ते ऊंचा है जिसकी न माता है, न पिता है, न बंधु है, न सखा है इसलिए वो भगवान के वर्ग में आ सकता है।

जो सर्वज्ञ हो

शास्त्रों में दिखाते हैं कि सभी देवता, ऋषि-मुनी किसी न किसी के पास अपने प्रश्न का उत्तर लेने जाते थे। लेकिन परमात्मा सर्वज्ञ सबकुछ जानता है, उसे किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं। जो सर्वज्ञ है वो ही परमात्मा है।

जो गुणों में अनंत हो

परमात्मा के गुणों को सबके साथ जोड़ा जाता है। सागर के साथ जोड़ा जाता है। भक्ति में जितने भी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ, महिमावान चीज़ें हैं उनके साथ परमात्मा की तुलना की जाती है। फिर भी कहते हैं कि ये तो उसके सामने कुछ भी नहीं है, सिर्फ तुलनात्मक कहा जात है। तो जिसके लिए हमारे लिए गुणों का वर्णन करना मुश्किल हो, वो परमात्मा है।

ये कुछ बिंदु हैं जो परमात्मा के निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिवान गुणों के सागर के रूप में पहचानने में मदद करेंगे। तो आइए आप भी सम्बन्ध जोड़ें।

कुछ इनके भी नज़रिये परमात्मा के बारे में...

भारत को विश्व गुरु बनाने में संस्थान की अहम भूमिका

आज के परिदृश्य में भारत ही है जो सम्पूर्ण विश्व में शांति, सद्भाव व समृद्धि का संदेश दे रहा है। सदियों से भारत विश्व में अध्यात्म की गंगा बहा रहा है। भारत विश्वगुरु था और फिर से बनने जा रहा है। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अहम् भूमिका रहेगी। क्योंकि ये संस्थान न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में अध्यात्म की अलख जगा रहा है।
- लोकसभा स्पीकर ओम बिरला,भारत।

परमात्म कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण

इस संस्थान में यहाँ आते ही मेरा अनुभव ये रहा कि मुझे एक सशक्त आध्यात्मिक फीलिंग हुई। यहाँ का प्रकम्पन मुझे शांति प्रदान कर रहा था। जीवन में बड़ा काम करने के लिए बड़ा दिल होना ज़रूरी है। छोटे दिल का व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता। और जिसका दिल जितना बड़ा होगा, वह उतना ही आध्यात्मिक होगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में दिल व मन को बड़ा करने की शिक्षा दी जाती है। इसी कारण इन्होंने आज विश्व के 140 देशों में भारत की आध्यात्मिकता को पहुंचाया है। मैं ये मानता हूँ कि जो काम सरकार नहीं कर सकती, वो ये ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान बखूबी कर रहा है। **- रक्षामंत्री राजनाथ सिंह,भारत।**

भारत में एक मात्र संस्थान कर रहा मनुष्य से देवता बनाने का महान कार्य

मन एक साधन है जो हमारे बंधन या स्वतंत्रता का कारण हो सकता है, ये तो इसके उपयोग पर निर्भर करता है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने आम आदमी को आसान तरीके से राजयोग सिखाया है। वे मनुष्य को देवता बनाने का कठिन कार्य कर रही हैं। मूल्य किसी भी राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति है। आज पूरे विश्व में योग के भारतीय विज्ञान की मांग है। ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संगठनों ने राजयोग को जन-जन तक ले जाने के लिए बहुत महान कार्य किया है। प्रत्येक भारतीय को इस कार्य पर गर्व महसूस करना चाहिए। भारत में ऐसे संस्थान का होना बहुत ही गर्व की बात है।
- माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ,उ.प्र.।

विश्व शांति प्रसार की अद्भुत संस्था

दुनिया भर में शांति का फैलाव करने वाली यदि कोई संस्था है तो वो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। योग के माध्यम से विश्व को शांति प्रदान करने में कोई संस्था यदि यशस्वी पाई गई है तो वो है यह ब्रह्माकुमारी संस्था। पुरुष प्रधान समाज में महिला भी धार्मिक, यौगिक भूमिका निभा सकती है, ऐसे प्रैक्टिकल कर दिखाने वाली संस्था है ब्रह्माकुमारीज़। विश्व में शांति का प्रसार करने में इस संस्था ने महती भूमिका निभाई है। **- श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरु चन्ना सिद्धराम।**

मुझे साक्षात भगवान की अनुभूति हुई

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ही दिया जाता है। यहाँ योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई। **-रसिक पीठाधीश महंत जन्मेजयशरण,अध्यक्ष,श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास,जानकी घाट,बड़ा स्थान,अयोध्या।**

यहाँ शास्त्रों में वर्णित दिव्यता का अनुभव हुआ

जिस प्रकार की यहाँ पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादी जी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। **- एच.एच. श्री स्वामी अध्यात्मानंद जी महाराज,अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम,अहमदाबाद।**